''बुन्देलखण्ड के आदिवासी महिलाओं का जीवन संघर्ष''

डॉ0 गुलाबधर

सहायक आचार्य, चित्रकला विभाग

ज0रा0दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ0प्र0)

बुन्देलखण्ड क्षेत्र चित्रकूट अनन्तकाल से विश्व चेतना का एक सजग प्रेरणा केन्द्र रहा है। गहन वन प्रांतर में हजारों ऋषि मुनियों द्वारा जप तप ध्यान तथा योग के माध्यम से लोक हितकारी कार्यों के कीर्तिमान स्थापित किये गये हैं। प्रकृति ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र को भरपूर उपहार देकर सम्पूर्ण विश्व को आकर्षित करने की शक्ति–सामर्थ्य प्रदान की है। अपने समय के चितंक मार्गदर्शक, अत्रि, अनुसुइया, दत्रातेय, महर्षि मारकण्डेय, महाराजा अम्बरीश हजारों वर्ष बाद भी आज अपनी तपस्या की सुगंध से सम्पूर्ण वातावरण को जीवन बनाये हुए है। विश्व के कोने–कोने से ज्ञान के पिपासु बटुक हजारों की संख्या में आकर यहाँ विभिन्न में आ–आकर यहाँ विभिन्न आश्रमों में रहकर अपने व्यक्तित्व को सँवारा तथा इतिहास को बनाया है। दशरथ पुत्र राम अपने भ्राता लक्ष्मण तथा पत्नी सीता सहित चित्रकूट में आकर 11 वर्ष रहे। इस वनवास के पीछे ऐतिहासिक तथा लोक हितकारी मंगलमय का सेतु था।[1]

आतताई रावण तथा अन्य दुष्ट प्रवृत्तियाँ रचना धर्मियों को सता रही थी। सामाजिक जीवन, आतंक अनिश्चय की काली छाया में सिसक रहा था। तत्कालीन विचारक चिंतक हतप्रभ तथा निराश से थे। पुरूषार्थी परशुराम ने प्रेरक की भूमिका का निर्वाह किया। राजशाही की सीमा में राम न बधे, ऐसी स्थिति उत्पन्न करके विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि ने राम को चित्रकूट की तपोभूमि में संस्कारित होने तथा उस काल के काल पुरूष क्षत्रिय पुरोधा पूज्य कामता कोल आदि के सानिध्य में रहने का वातावरण उत्पन्न किया। राम ने यहाँ के वनवासी कोलों का प्यार, स्नेह, सहयोग एवं मार्गदर्शन पाकर ऋषि–मुनियों के पास बैठकर अपनी प्रतिभा को संवारा था। राम ने प्रातः स्मरणीय कामता कोल के नेतृत्व में वनवासियों को संगठित किया तथा आगामी रणनीति की प्रेरणा पाई। यह बुन्देलखण्ड क्षेत्र चित्रकूट की देन थी। राम अपने आगामी जीवन में आताताईयों का वध करने में सफल हुए। सम्पूर्ण भौतिक संसाधनों पर अवैध, अनैतिक अधिकार स्थापित करने वाले मानवता को संताप पहुँचाने वाले रावण, कुम्भकरण एवं मेघनाद जैसे राक्षसों के वध की सफलता के पीछे बुन्देलखण्ड की प्रेरणा समाहित है।

स्वपत्नी देवी रत्ना की प्रेरणा पाकर तुलसी चित्रकूट के गहन विविध में भटके तुलसी यहाँ भटके ही नहीं प्रकृति तथा लोक हित चिंतकों की छाया में रहे भी। खेद है कि वैभवशाली बुन्देलखण्ड क्षेत्र आज विषम विसंगतियों, समस्याओं, अवैध एवं अनैतिक गतिविधियों का केन्द्र है। जिस क्षेत्र में भगवान जन–जन का आराध्य राम रमा हो जहाँ–जहाँ आज भी हजारों श्रेष्ठ विचारक विद्यमान हो, जहाँ वर्ष पर्यन्त राम के गुणों की नित्य चर्चा होती हो वह भू–भाग उत्पीड़न, ठगी, कुपोषण, सामन्तशाही आदि का शिकार हो, सबके लिए शर्मनाक है।[2]

नेदुआ गाँव का केला बताता है कि उसके समाज के नौ परिवार गाँव से बाहर अलग कोने में बसे हैं। सुकर पालन प्रमुख धन्धा है। गाँव के किसी कुआँ, हैण्डपम्प से वह आज तक पानी नही भर पाये। रोज नदी का गन्दा पानी पीना पड़ रहा है। उनके बच्चे स्कूल नहीं जाते। क्योंकि अध्यापक द्वारा उनके बच्चों को अलग बैठाया जाता है। गाँव के बच्चे उन्हें इतना मारते हैं कि उनके बच्चे कई दिनों तक चल फिर नहीं पाते। उसकी एक लड़की मीनू थी जिसकी गाँव का ही दबंग अभी 1 अगस्त को ले जाकर कहीं बेंच आया है। इसके पहले यहीं दबंग लड़की की माँ माया को भी एक वष पहले ले जाकर कहीं बेंच आया था। जिसका आज तक कुछ पता नहीं लगा। हताश होकर परागीलाल विद्याधाम समिति के मंत्री राजा भइया को अपनी व्यथा बतायी वह उसको लेकर थाने गये तब कहीं रिपोर्ट दर्ज हो पायी। अब इस परिवार में से 5 महिलायें गायब की जा चुकी हैं। जिनका कोई आज तक पता नहीं चला। यहाँ की महिला, विमला, शान्ती, सुनीता, कल्ली बताती हैं कि क्या करें, कहाँ जाये हमारा हर पल असुरक्षित है। गाँव के दबंग जीने नहीं देते। जब आदमी घर में नहीं होते तब बस्ती में घुस आते हैं। मनमानी करके चले जाते हैं। कभी अच्छे कपड़े अगर पहन कर बाहर निकल पड़े तो इस कदर अश्लील छेड़छाड़ करते हैं कि सर झुकाकर आबरू बचाकर निकलना ही खैरियत है। बहु–बेटियों की इज्जत सुरक्षित नहीं है। अगर पुरूष विरोध करते हैं तो जानवरों की तरह बाँधकर पीटे जाते हैं। हम लोग अपने पुरूषों को तमाम बातें इस भय से नहीं बताते है। अगर वह किसी से कहेगें तो पीटे जायेगे।[3] आजादी के पहले से ही अपनी अत्यधिक कठिन भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों के कारण देश के विपन्नतम् क्षेत्रों में गिने जाने वाले बुन्देलखण्ड में आज भी गरीबी, शोषण, अन्याय और अनाचार की क्रूर कथायें गुंज रही हैं। लगभग सभी प्रमुख राजनैतिक पार्टियों की सरकारें आयी और चली गयी लेकिन यहाँ की पथरीली जमीन में विकास की गंगा नहीं बह पायी। वन सम्पदा, खनिज नदियाँ, तालाबों आदि की उपयोगिता का ज्ञान भी आचरण में नहीं उतर पाया।

वास्तव में यह भारत की नारी के स्वाभिमान और स्वावलम्बन, आत्म–निर्भरता के एकात्मवादी भाव का सात्विक आन्दोलन है। महिलाओं की स्वतंत्रता, समानता की यह मांग केवल राजनीतिक ही नहीं है बल्कि पुरूषों के शोषण और उत्पीड़न के उभार के चलते ही यह संघर्ष बढ़ रहा है। राजनीतिक तौर पर भले ही कहा जाये कि महिलाओं की दीन दशा सुधारने की दिशा में संघर्ष हो रहा है लेकिन वास्तविकता यह है कि ग्रामीण स्तर पर महिलाओं की दुर्दशा देख कर ये नहीं कहा जा सकता कि निकट भविष्य में महिलायें समता और समानता के साथ आत्म निर्भरता से समाज में सम्मान प्राप्त कर सकेगी।

चित्रकूटधाम कर्वी नगरपालिका की गरीब बस्ती के रमाबाई का विवाह अर्द्धशिक्षित युवक के साथ हुआ था पति एक मध्यम परिवार से सम्बन्धित था। रमाबाई के पाँच बच्चे हुए। चूँकि पति शराबी व जुआरी था, जिसको अपने नशे की लत के लिए घर का आवश्यक सामान ही नहीं बल्कि पत्नी के मायके से मिला दहेज का सामान बेंच डाला। घर में जब दो जून की रोटी के लाले पड़ने लगे तो मजबूर बेबश बेचारी रमाबाई अपने मासूम बच्चों के भरण पोषण हेतु मजदूरी

करने घर से निकली। लेकिन रमाबाई हाड़तोड़ मेहनत के बाद भी अपना व परिवार का समुचित भरण–पोषण करने में विवश थी। जिसके कारण परिवार में कहल बनी रहती थी।

परिवार की आर्थिक दुर्दशा देख पति को भी ज्ञान हुआ। वह भी घर के सामने साइकिल मरम्मत करने लगा लेकिन जो कमाता उसे शराब में उड़ा देता था।[4] अधिक मदिरापान करने से पति रोगी हो गया। हाड़तोड़ मेहनत करके उपचार कराया लेकिन वह अपने सुहाग को नहीं बचा सकी। मृत्यु के पूर्व पति ने 2001 में इलाहाबाद बैंक से मकान बनाने के लिए 11400 रू0 ऋण लिया था। जिस दस वर्ष के अन्दर अदा करने पर ब्याज नहीं था। लेकिन दस वर्ष के बाद पूरा ब्याज सहित पैसा बैंक को वापस करना था। मार्च 2002 के मृत्युपरान्त समाज कल्याण विभाग से एक आदमी रमाबाई के पास आया और ऋण अदा करने का तकादा किया। बेबस रमाबाई कहाँ से ऋण अदा करे। इस पर समाज कल्याण विभाग के दरिन्दे ने कहा कि वह उसे तथा साहब को खुश कर दे तो सब माफ हो जायेगा।

इस पर रमाबाई ने उसे दुत्कार कर भगा दिया। रमाबाई ने अपने मकान के सामने रोड़ पर सब्जी ब्रिकी करती है दरिद्रता कमर तोड़ मंहगाई रोटी कपड़ा, मकान, दो जवान पुत्रियों के विवाह, बैंक का कर्ज, पुत्रों के लालन–पालन आदि के यह सवाल रमाबाई के सामने मुंहबाये खड़े हैं। विचार योग्य है आज किसका कल्याण हो रहा है।

बुन्देलखण्ड भड़ावरा (ललितपुर) धौरी सागर एवं सोरई न्याय पंचायत की तीन दर्जन आदिवासी महिलायें अपने सामाजिक आर्थिक विकास के लिए स्वयं निर्णय लिया। अपनी जूझती जिन्दगी की दस्तान सुनाते हुए सकरा गाँव के झरईबाई एवं मिथला सहरिया ने कहा कि जलाऊ लकड़ी 20 किमी0 दूर जंगल से लाकर भड़ावरा में 30 रू0 का एक गट्ठा बेंचती है जिसमें 25 रू0 का राशन 5 बस का किराया देकर घर पहुँचते हैं। तब चूल्हा जलता है। गरीबी का जीवन हमारी किस्मत में है।[5] मिथला ने बताया कि मेरे 10 बच्चें हैं जिनका पालन–पोषण करते हैं। आदिवासी महिलाओं ने बताया कि वन दरोगा गाँव वालों से सौ–सौ रूपया वसूलता है तथा जेल भेजवाने की धमकी देता है।

दखदी गाँव की महारानी द्रोपदी ने कहा कि खदानों में काम करते हैं जो मजदूरी मिलती है वह भी समय से नहीं मिलती है। गांव के ताकतवर लोग परेशान करते हैं। आदिकाल से ही नारी की महत्ता अक्षुण्य है। आदिवासी समुदाय पीढ़ियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ा है। बालाश्रम कौड़ियों के मोल बिक रहा है। तमाम सारे उत्पीड़न इन्हें जवान नहीं होने देते। बचपन से सीधे बुढ़ापा या मृत्यु की ओर ले जाते हैं। क्योंकि कभी भी इन्हें न्यूनतम मजदूरी नहीं मिलती, जिससे ये भर पेट भोजन रोटी पा सकें। दूसरी तरफ खदानों से अमीरों की आर्थिक स्थिति निरन्तर ऊँचाई की ओर बढ़ती जा रही है। क्षेत्र के लगभग अमोदा, दारूतला, खैरपुरा, जलन्धर, खदरी आदि गांवों के लोग बिमारी व कुपोषण के शिकार हैं। इन्हें देखकर बदहाल स्थिति की कहानी स्वमेव स्पष्ट हो जाती है। यदि इनसे इनकी स्थिति पूछी जाती है तो बताने में असमर्थ सिद्ध होते हैं। घास–पूस की झोपड़ी कच्चे मकानों में पत्थरों का छप्पर अलमोनियम व मिट्टी के टूटे–फूटे बर्तन फटे–पुराने चीथरे कपड़े इनकी बदहाली की कहानी कहते हैं। सान फेकरा घास

व चेंच अकौआ की भाजी इनकी पेट भरती है। भूमि पट कुआ, गन्दा पानी इनकी प्यास बुझाता है। जिस कारण ये लोग हैजा, निमोनिया, मलेरिया, टी0बी0 इत्यादि रोगों के शिकार होते रहते है। आधी उम्र में ही जीवन की कहानी समाप्त हो जाती है।[6]

आज भी तमाम परिवार अपनी जिन्दगी ''रोज कमाओ, रोज खाओ'' की तर्ज पर गुजरने को मजबूर है। व्यक्ति को यदि पेट पालने के लिए जीविका चलाने के लिए ही यदि दर–दर भटकना पड़े तो जिन्दगी में केवल अंधेरा के सिवाय अन्य कुछ भी नहीं रह जाता और वही क्रम कई पीड़ियों तक लगातार चलता रहता है। वैसे कुछ परिवार मानिकपुर ब्लाक के आदिवासी बाहुल्य गाँवों में देखे जा सकते हैं। यह परिवार दो जून की रोटी के लिए दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, आगरा, मुम्बई, सूरत आदि बड़े शहरों के लिए पलायन कर जाते हैं। जो परिवार बाहर नहीं जा पाते वह परिवार जंगल की लकड़ी बेंचकर अपना गुजर बसर करते हैं। पुरूष दिन में जाकर लकड़ी लाता है। अगले दिन के लिए गट्ठा बनाकर रख देता है। सुबह महिलायें चार बजे से उठकर तैयार होकर अपने गाँव के नजदीकी रेलवे स्टेशन पहुँच जाती है। स्टेशन से गट्ठे लादकर इलाहाबाद, सतना, कर्वी, बांदा, महोबा ले जाकर बेंचती हैं।

रात्रि ट्रेन से फिर वापस लौटकर घर जाती हैं। कुछ महिलायें स्टेशन में ही लकड़ी खरीद कर इकट्ठा 8 से 10 गट्ठे लेकर जाती है। जिससे कुछ जगह ही कमाई हो जाती है। महिलाओं को प्रतिदिन 2 से 10रू0 तक प्रति गट्ठा खर्च पुलिस एवं वन कर्मियों को देना पड़ता है। जिससे पुलिस व वन कर्मियों की अच्छी कमाई हो जाती है। भूखे आदिवासियों को आज की रोटी की चिन्ता है। भविष्य की नहीं उन्हें यह नहीं मालूम कि जब जंगल नहीं होगा तब उनके बच्चे अन्य समाज का क्या होगा। मइका कोल अपने दिल से अरमान कुछ इस तरह से व्यक्त करता है कि अगर सरकार ईमानदारी पूर्वक सरकारी योजनायें गरीबों तक पहुंचाये उनको हमेशा काम दे। स्थायी रूप से रहने के लिए जमीन एवं घर दे तो हम लोग की भी हालत सुधर सकती है। हमारे भी बच्चे पढ़ लिख कर विकास कर सकते हैं। हम भी अच्छे इन्सान हो सकते हैं।

आदिकाल से ही महिलाओं की महत्ता अक्षुण्य है। महिला सृजन की पूर्णता है। उसके अभाव में मानवता के कल्याण की कल्पना महज एक दिवा स्वप्न है।[7] सामाजिक रचना विधान में महिला में माँ, प्रेयसी, पत्नी और पुत्री अनेक रूप है। वह सम परिस्थितियों में ममतामयी भी है। विषम परिस्थितियों में दुर्गा भवानी है। उसकी अपेक्षा करके हम पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकते। वह गाड़ी की एक पहिया है। जिसके बिना ममग्र जीवन व्यर्थ है। हमने अपनी श्रेष्ठता और शक्ति सम्पन्नता का लाभ उठाकर महिला जाति पर अत्याचार किये है। मानव ने महिला की स्वतंतत्रा का अपहरण करके उसे पराधीन बना दिया है। सहयोगिनी के स्थान पर उसे अनुचरी बना दिया है और स्वयं उसका स्वामीनाथ, पथ–प्रदर्शक तथा साक्षात् ईश्वर बन गया। पुरूष ने महिला के मस्तिष्क में यह बात अच्छी तरह जाना ही है कि वह असहाय हीन और अबला है। पुरूष बिना समाज में उसकी स्थिति निरर्थक है। पुरूष ही उसकी सुरक्षा करता है। अतः पूरी तरह से पुरूष पर ही निर्भर रहना उसका एक मात्र धर्म है। फिलहाल इन्हें तलाश है किसी भगीरथी की जो इनके जीवन चेहरों पर खुशी ला सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. माँ की ओर, जुलाई 2006, अंक–99, पृ0–12
2. सुधारानी श्रीवास्तव– भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिति, पृ0–242
3. पहरूआ पहल, 1 अप्रैल 2007, अंक–7, पृ0सं0–24
4. गाँव की ओर, जुलाई 2003, पृ0सं0–14 अंक–55
5. कुरूक्षेत्र विशेष अंक, फरवरी 2018 पृ0–66, अंक–4
6. समाज, राजनीति और महिलायें दशा और दिशा, डॉ0 निशांत सिंह, पृ0–67
7. गाँव की ओर, अप्रैल 2006, पृ0सं0–10